बी.पी.सी.जी.–171 : सामान्य मनोविज्ञान
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः **BPCG-171**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.पी.सी.जी.–171 /ए.एस.एस.टी./TMA/ जुलाई, 2026 - जनवरी, 2027**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः सभी प्रश्न अनिवार्य है।

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित *वर्णनात्मक श्रेणी* के प्रत्येक प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के लिए 20 अंक नियत है। 2x20=40

1. तंत्रिका कोशिका और तंत्रिका आवेग के प्रकार और अर्थ पर चर्चा कीजिए। तंत्रिका तंत्र की संरचना और कार्यों की व्याख्या कीजिए। 20

2. अभिप्रेरणा के विभिन्न प्रकारों और सिद्धांतों पर विस्तृत रूप से चर्चा कीजिए। 20

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित *मध्य श्रेणी* के प्रत्येक प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के लिए 10 अंक नियत है। 3x10=30

3. बुद्धि के विभिन्न सिद्धांतों पर चर्चा कीजिए।

4. गेस्टाल्ट के सिद्धांतों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

5. स्मृति के मॉडलों की व्याख्या कीजिए।

सत्रीय कार्य - III

निम्नलिखित *संक्षिप्त श्रेणी* के प्रत्येक प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के लिए 6 अंक नियत है। 5x6=30

6. काम और संगठन

7. प्रत्यक्षण

8. संवेगों के सिद्धांत

9. चिंतन

10. जीन पियागेट की थ्योरी

1. तंत्रिका कोशिका और तंत्रिका आवेग के प्रकार और अर्थ पर चर्चा कीजिए। तंत्रिका तंत्र की संरचना और कार्यों की व्याख्या कीजिए। (20 अंक)

उत्तर

तंत्रिका तंत्र मानव व्यवहार का जैविक आधार है। व्यक्ति जो कुछ महसूस करता है, सोचता है, सीखता है और उसके अनुसार प्रतिक्रिया देता है, उसमें तंत्रिका कोशिकाओं की केंद्रीय भूमिका रहती है। बाहरी वातावरण तथा शरीर के भीतर से आने वाली सूचनाएँ तंत्रिका मार्गों से मस्तिष्क तक पहुँचती हैं और वहाँ से आवश्यक निर्देश मांसपेशियों एवं ग्रंथियों तक जाते हैं। इसलिए तंत्रिका कोशिका, तंत्रिका आवेग और तंत्रिका तंत्र को परस्पर जुड़ी हुई प्रक्रियाओं के रूप में समझना आवश्यक है।

तंत्रिका कोशिका का अर्थ और संरचना

तंत्रिका कोशिका अथवा न्यूरॉन तंत्रिका तंत्र की मूल संरचनात्मक एवं कार्यात्मक इकाई है। इसकी कोशिका-काय में केंद्रक और अन्य कोशिकांग होते हैं, जो कोशिका के पोषण तथा उपापचय में सहायता करते हैं। कोशिका-काय से निकले छोटे शाखित तंतु डेंड्राइट कहलाते हैं; ये अन्य कोशिकाओं से संकेत ग्रहण करते हैं। लंबा तंतु अक्षतंतु या ऐक्सॉन होता है, जो संदेश को कोशिका-काय से दूर ले जाता है। अनेक अक्षतंतुओं पर मायलिन आवरण होता है, जो विद्युत-रोधक की तरह काम करके संकेतों का संचरण तेज करता है। इसके बीच के रिक्त स्थान रैनवियर के नोड कहलाते हैं। अक्षतंतु के अंतिम सिरे पर बने टर्मिनल बटन अगली कोशिका से संचार में भूमिका निभाते हैं।

तंत्रिका कोशिकाओं के प्रकार

कार्य के आधार पर न्यूरॉन मुख्यत: तीन प्रकार के माने जाते हैं। संवेदी या अभिवाही न्यूरॉन त्वचा, आँख, कान तथा अन्य ग्राहियों से सूचना केंद्रीय तंत्रिका तंत्र तक पहुँचाते हैं। प्रेरक या अपवाही न्यूरॉन मस्तिष्क तथा मेरुरज्जु से मांसपेशियों और ग्रंथियों को निर्देश देते हैं। अंत:स्थ या संयोजी न्यूरॉन मुख्यत: केंद्रीय तंत्रिका तंत्र में होते हैं और संवेदी एवं प्रेरक न्यूरॉनों के बीच सूचनाओं के